पुणा International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class-VII

Hindi

Specimen copy

Year- 2020-21

Semester- 2

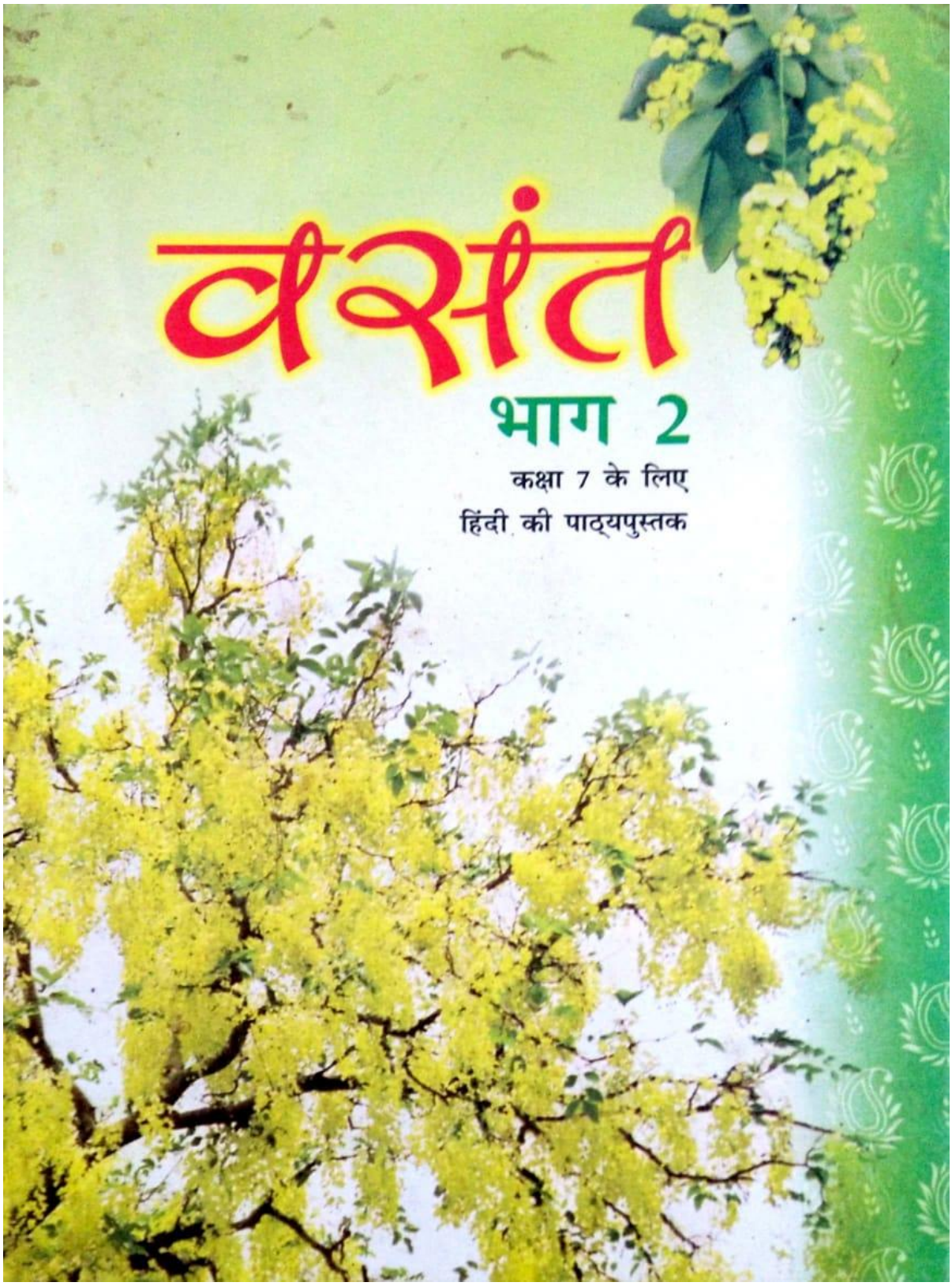
वसंत
भाग 2
कक्षा 7 के लिए
हिंदी की पाठ्यपुस्तक

पाठ- ।। रहीम के दोहे

*** शब्दार्थ**

कहि- कहते है
विपत्ति- मुसीबत
साँचे- सच्चा
जाल- मछल पकडने का जाल
मीनन- मछली
सरवर- तालाब
सुजान- सज्जन
थोथा-खाली
पाछिली- पीछले समय की
घाम -गर्मी

*** अतिलघु उत्तरीय प्रश्न**

।) जीवन में मित्रों की अधिकता कब होती है?

उत्तर- जब जीवन में काफ़ी धन-दौलत, मान-सम्मान बढ़ जाता है तो मित्रों और शुभचिंतकों की संख्या बढ़ जाती है।

2) 'जल को मछलियों से कोई प्रेम नहीं होता' इसका क्या प्रमाण है?

उत्तर- जल को मछलियों से कोई प्रेम नहीं होता। इसका यह प्रमाण है कि मछलियों के जाल में फँसते ही जल उन्हें अकेला छोड़कर आगे बह जाता है।

3) सज्जन और विद्वान के संपत्ति संचय का क्या उद्देश्य होता है?

उत्तर- सज्जन और विद्वान संपत्ति का अर्जन दूसरों की भलाई के लिए करते हैं। उनका धन हमेशा दूसरों की भलाई में खर्च होता है।

4) रहीम ने क्वार मास के बादलों को कैसा बताया है?

उत्तर- रहीम ने क्वार महीने के बादलों को थोथा यानी बेकार गरजने वाला बताया है।

*** लघु उत्तरीय प्रश्न**

।) वृक्ष और सरोवर किस प्रकार दूसरों की भलाई करते हैं?

उत्तर- वृक्ष और सरोवर अपने द्वारा संचित वस्तु का स्वयं उपयोग नहीं करते हैं, यानी वृक्ष असंख्य फल उत्पन्न करता है लेकिन वह स्वयं उसका उपयोग नहीं करता। वह फल दूसरों के लिए देते हैं। ठीक इसी प्रकार सरोवर भी अपना जल स्वयं न पीकर उसे समाज की भलाई के लिए संचित करता है।

2) रहीम मनुष्य को धरती से क्या सीख देना चाहता है?

उत्तर- रहीम मनुष्य को धरती से सीख देना चाहता है कि जैसे धरती सरदी, गरमी व बरसात सभी ऋतुओं को समान रूप से सहती है, वैसे ही मनुष्य को भी अपने जीवन में सुख-दुख को सहने की क्षमता होनी चाहिए।

3) रहीम ने क्वार के बादलों की तुलना किससे और क्यों की है?

उत्तर- रहीम ने क्वार के बादलों की तुलना उन लोगों से की है जो अमीरी से निर्धन हो चुके हैं। निर्धन लोग जब उन दिनों की बात करते हैं, जब वे धनी तथा सुखी थी, तो उनकी बातें पूर्णतः क्वार के बादलों की खोखली गरज जैसी होती है। क्वार बादल गरजते भर हैं, कभी बरसते नहीं, उसी प्रकार धनी लोग निर्धन होकर अपनी अमीरी की बातें करते हैं।

*** दीर्घ उत्तर प्रश्न**

l) रहीम के दोहों से हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर- रहीम के दोहों से हमें सीख मिलती है कि हमें अपने मित्र का सुख-दुख में बराबर साथ देना चाहिए। हमारे मन में परोपकार की भावना होनी चाहिए। जिस प्रकार प्रकृति हमारे लिए सदैव परोपकार करती है, उसी प्रकार हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए। रहीम वृक्ष और सरोवर की ही तरह संचित धन को जन कल्याण में खर्च करने की सीख देते हैं। अंतिम दोहे में रहीम हमें सीख देने का प्रयास करते हैं, कि धरती की तरह जीवन में सुख-दुख को समान रूप से सहन करने की शक्ति रखनी चाहिए।

व्याकरण

हिंदी में विराम चिह्न बहुत महत्वपूर्ण है विराम चिह्न का उपयोग लिखनेके समय उपयोग किया जाता है यह वाक्य के प्रकार और उसके स्थान के बारे मे भी जानकारी देता हैं। विराम चिह्न वाक्य के अनुसार बदलते है।

दुसरे शब्दो मे यह कह सकते है कि भाषा में स्थान -विशेष पर रुकने अथवा उतार -चढ़ाव आदि दिखाने के लिए जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है उन्हें ही ' विराम चिन्ह ' कहते है !

l) **पूर्ण विराम** (।) (Full Stop)

2) **अल्प विराम** (,) (Comma)

3) **अर्ध विराम** (;) (Semicolon)

4) **प्रशनवाचक चिन्ह** (?) (Question Mark)

5) **विस्मयादिवाचक चिन्ह** (!) (Exclamation Mark)

6) **निर्देशक** (—) (Dash)

7) **योजक** (-) (Hyphen)

8) **उद्धरण चिन्ह** (" ") (Quotation Mark)

9) **विवरण चिन्ह** (:-) (Sign of Following)

लेखन- विभाग

रहीम पर अनुच्छेद

अबदुर्ररहीम खानखाना का जन्म संवत् १६१३ (ई. सन् १५५६) में लाहौर में हुआ था। संयोग से उस समय हुमायूँ, सिकंदर , सूरी का आक्रमण का प्रतिरोध करने के लिए सैन्य के साथ लाहौर में मौजूद थे।रहीम के पिता बैरम खाँ तेरह वर्षीय अकबर के शिक्षक तथा अभिभावक थे। बैरम खाँ खान-ए-खाना की उपाधि से सम्मानित थे। वे हुमायूँ के साढ़ और अंतरंग मित्र थे। रहीम की माँ वर्तमान हरियाणा प्रांत के मेवाती राजपूत जमाल खाँ की सुंदर एवं गुणवती कन्या सुल्ताना बेगम थी। जब रहीम पाँच वर्ष के ही थे तब गुजरात के पाटण नगर में सन १५६१ में इनके पिता बैरम खाँ की हत्या कर दी गई। रहीम का पालन-पोषण अकबर ने अपने धर्म-पुत्र की तरह किया। शाही खानदान की परंपरानुरूप रहीम को 'मिर्जा खाँ' का ख़िताब दिया गया। रहीम ने बाबा जंबूर की देख-रेख में गहन अध्ययन किया। शिक्षा समाप्त होने पर अकबर ने अपनी धाय की बेटी माहबानो से रहीम का विवाह करा दिया। इसके बाद रहीम ने गुजरात, कुम्भलनेर, उदयपुर आदि युद्धों में विजय प्राप्त की। इस पर अकबर ने अपने समय की सर्वोच्च उपाधि 'मीरअर्ज' से रहीम को विभूषित किया। सन १५८४ में अकबर ने रहीम को खान-ए-खाना की उपाधि से सम्मानित किया। रहीम का देहांत ७१ वर्ष की आयु में सन १६२७ में हुआ। रहीम को उनकी इच्छा के अनुसार दिल्ली में ही उनकी पत्नी के मकबरे के पास ही दफना दिया गया। यह मज़ार आज भी दिल्ली में मौजूद हैं। रहीम ने स्वयं ही अपने जीवनकाल में इसका निर्माण करवाया था।हुमायूँ ने युवराज अकबर की शिक्षा-दिक्षा के लिए बैरम खाँ को चुना और अपने जीवन के अंतिम दिनों में राज्य का प्रबंध की जिम्मेदारी देकर अकबर का अभिभावक नियुक्त किया

था। बैरम खाँ ने कुशल नीति से अकबर के राज्य को मजबूत बनाने में पूरा सहयोग दिया। किसी कारणवश बैरम खाँ और अकबर के बीच मतभेद हो गया। अकबर ने बैरम खाँ के विद्रोह को सफलतापूर्वक दबा दिया और अपने उस्ताद की मान एवं लाज रखते हुए उसे हज पर जाने की इच्छा जताई। परिणामस्वरुप बैरम खाँ हज के लिए रवाना हो गये। बैरम खाँ हज के लिए जाते हुए गुजरात के पाटन में ठहरे और पाटन के प्रसिद्ध सहस्रलिंग सरोवर में नौका-विहार के बाद तट पर बैठे थे कि भेंट करने की नियत से एक अफगान सरदार मुबारक खाँ आया और धोखे से बैरम खाँ की हत्या कर दी। यह मुबारक खाँ ने अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए किया।इस घटना ने बैरम खाँ के परिवार को अनाथ बना दिया। इन धोखेबाजों ने सिर्फ कत्ल ही नहीं किया, बल्कि काफी लूटपाट भी मचाया। विधवा सुल्ताना बेगम अपने कुछ सेवकों सहित बचकर अहमदाबाद आ गई। अकबर को घटना के बारे में जैसे ही मालूम हुआ, उन्होंने सुल्ताना बेगम को दरबार वापस आने का संदेश भेज दिया। रास्ते में संदेश पाकर बेगम अकबर के दरबार में आ गई। ऐसे समय में अकबर ने अपने महानता का सबूत देते हुए इनको बड़ी उदारता से शरण दिया और रहीम के लिए कहा "इसे सब प्रकार से प्रसन्न रखो। इसे यह पता न चले कि इनके पिता खान खानाँ का साया सर से उठ गया है। बाबा जम्बूर को कहा यह हमारा बेटा है। इसे हमारी दृष्टि के सामने रखा करो। इस प्रकार अकबर ने रहीम का पालन- पोषण एकदम धर्म- पुत्र की भांति किया। कुछ दिनों के पश्चात अकबर ने विधवा सुल्ताना बेगम से विवाह कर लिया।

*** गतिविधि– संत कबीर का चित्र बनाओ।**

पाठ 12 कंचा

*** पाठ का सार**

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने बाल मनोविज्ञान का सहज, सुंदर वर्णन किया है। अप्पू नामक बच्चा किस प्रकार कंचे की जार के ओर आकर्षित होता है, और अपने स्कूल के फीस के पैसे भी नहीं देता।

*** शब्दार्थ**

सियार- गीदड़
केंद्रित- टिका हुआ
बुदधू- मूर्ख
जार- शीशे का पात्र
निषेध- मना करना
कर्मठ- कर्मशील
बायलर- पानी उबालने का यंत्र
शंका- संदेह

*** अतिलघु प्रश्न**

1 वह अकेला ही क्यों खेला करता था?

उ- अप्पू की एक बहन थी जिसकी मुत्यू के बाद वह अकेला खेला करता था।

2 मास्टर जी की सफलता किस बात में है?

उ- लड़के का जवाब उसके मन से बाहर ले आना।

*** लघु प्रश्न**

1 अप्पू को कुछ भी दिखाई या सुनाई क्यों नहीं दे रहा था?

उ- अप्पू को कुछ भी दिखाई सुनाइर इसलिए नहीं दे रहा था, क्योकि वह पूरी तरह मजेदार कहानी के खयालों में था।

2 अप्पू का ध्यान किस ओर आकृष्ट हुआ था?

उ -अप्पू का ध्यान कंचों के लिए जार की ओर आकृष्ट हुआ।

3 अप्पू ने जिस तरह कंचे खरीदे क्या आप उसे सही मानते हो?

उ- अप्पू ने अपने फीस के पैसों से कंचे खरीदे थे। हम इसे सही नहीं मानते है, माता-पिता हम पर भरोसा करते है। कंचे खरीदने के लिए उसे माता -पिता को बताकर उनसे पैसे लेने चाहिए थे।

4 कंचा कहानी हमें क्या शिक्षा देती है?

उ- कंचा नामक कहानी बाल मनोविज्ञान का वर्णन करती है। व्यक्ति को अपनी पसंद के अनुसार काम करते हुए अपने काम पर ध्यान देना चाहिए।

*** दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

1)कहानी में अप्पू ने बार-बार जॉर्ज को याद किया है? इसका क्या कारण था?

उत्तर- जॉर्ज कंचे का अच्छा खिलाड़ी है। वह अप्पू का सहपाठी था। चाहे कितना भी बड़ा लड़का उसके साथ कंचा खेले, उससे वह हार जाएगा। हारे हुए खिलाड़ी को अपनी बंद मुट्ठी जमीन पर रखनी पड़ती थी। तब जॉर्ज कंचा चलाकर बंद मुट्ठी के जोड़ों की हड्डी तोड़ता है। अप्पू सोचता है कि जॉर्ज के आते ही वह उसे लेकर कंचे खरीदने जाएगा और उसके साथ खेलेगा। अप्पू की इस सोच के पीछे शायद यह कारण था कि जॉर्ज के साथ रहने

से उसे हार का सामना नहीं करना पडेगा। इतना ही नहीं, वह सोचता है कि जॉर्ज के साथ रहने पर कक्षा में उसका कोई हँसी नहीं उड़ाएगा। इसके अलावे वह जॉर्ज के अतिरिक्त किसी को खेलने नहीं देगा।

व्याकरण

*** लिंग की परिभाषा**

"संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति या वस्तु की नर या मादा जाति का बोध हो, उसे व्याकरण में 'लिंग' कहते है।"
दूसरे शब्दों में - संज्ञा शब्दों के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री जाति होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते है।
जैसे-
पुरुष जाति - बैल, बकरा, मोर, मोहन, लड़का आदि।
स्त्री जाति - गाय, बकरी, मोरनी, मोहिनी, लड़की आदि।
'लिंग' संस्कृत भाषा का एक शब्द है, जिसका अर्थ होता है 'चिह्न' या 'निशान'। चिह्न या निशान किसी संज्ञा का ही होता है। 'संज्ञा' किसी वस्तु के नाम को कहते है और वस्तु या तो पुरुषजाति की होगी या स्त्रीजाति की। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक संज्ञा या तो पुलिंग होगी या स्त्रीलिंग।

*** पुल्लिंग**

जिन संज्ञा के शब्दों से पुरुष जाति का पता चलता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं।
जैसे - पिता, राजा, घोडा, कुत्ता, आदमी, सेठ, मकान, लोहा, चश्मा, खटमल, फूल, नाटक, पर्वत, पेड़, मुर्गा, बैल, भाई, शिव, हनुमान, शेर आदि।

*** स्त्रीलिंग**

जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का पता चलता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।
जैसे - हंसिनी, लडकी, बकरी, माता, रानी, जूं, सुईं, गर्दन, लज्जा, नदी, शाखा, मुर्गी, गाय, बहन, यमुना, बुआ, लक्ष्मी, गंगा, नारी, झोंपड़ी, लोमड़ी आदि ।
स्त्रीलिंग के अपवाद
जैसे - जनवरी, मई, जुलाई, मक्खी, ज्वार, अरहर, मूंग, चाय, लस्सी, चटनी, जीभ, आँख, नाक, सभा, कक्षा, संतान, प्रथम, तिथि, छाया, खटास, मिठास, आदि।

लेखन-विभाग

*** मेरा बचपन पर निबंध**

बचपन जीवन का बहुत ही महत्वपूर्ण समय होता है बचपन में इतनी चंचलता और मिठास भरी होती है कि हर कोई फिर से बचपन को जीना चाहता है बचपन में वह धीरे-धीरे चलना, गिर पड़ना और फिर से उठकर दौड़ लगाना बहुत याद आता हैबचपन में पिताजी के कंधे पर बैठकर मेला देखने का जो मजा होता था वह अब नहीं आता है बचपन में मिट्टी में खेलना और मिट्टी से छोटे-छोटे खिलौने बनाना किसकी यादों में नहीं बसा है।बचपन में जब कोई डांटता था तो मां के आंचल में जाकर छुप जाते थे बचपन में मां की लोरियां सुनकर नींद आ जाती थी लेकिन अब वह सुकून भरी नींद नसीब नहीं होती है बचपन के वो सुनहरे दिन जब हम खेलते रहते थे तो पता ही नहीं चलता कब दिन होता और कब रात हो जाती थी।

बचपन में किसी के बाग में जाकर फल और बैर तोड़ जाते थे तब वहां का माली पीछे भागता था वह दिन किसको याद नहीं आते शायद इसीलिए बचपन जीवन का सबसे अनमोल पल हैमेरा बचपन सपनों का घर था जहां मैं रोज दादा-दादी के कहानी सुनकर उन कहानियों में ऐसे खो जाता था मानो उन कहानियों का असली पात्र में ही हूं बचपन के वह दोस्त जिनके साथ रोज सुबह-शाम खेलते, गांव की गलियों के चक्कर काटते और खेतों में जाकर पंछी

उड़ाते।मेरा बचपन गांव में ही बीता है इसलिए मुझे बचपन की और भी ज्यादा याद आती है बचपन में हम भैंस के ऊपर बैठकर खेत चले जाते थे तो बकरी के बच्चों के पीछे दौड़ लगाते थे बचपन में सावन का महीना आने पर हम पेड़ पर झूला डाल कर झूला झूलते थे और ठंडी ठंडी हवा का आनंद लेते थे। बचपन में मैं और मेरे दोस्त गर्मियों की छुट्टियों में बागों में बैर तोड़ने चले जाते थे खट्टे मीठे बेर हमें बहुत पसंद थे जिस कारण हम अपने आप को रोक नहीं पाते थे बागों के माली लकड़ी लेकर हमें मारने को दौड़ते लेकिन हम तेजी से दौड़ कर घर में छुप जाते थे|

हमारे घर के बाहर एक बड़ा चौक था जहां पर गांव के सभी बड़े बुजुर्ग शाम को बैठते थे और गांव और देश की चर्चा करते थे हम भी वहां पर खेलते रहते थे कभी-कभी हमें बुजुर्गों से शिक्षाप्रद कहानियां सुनने को भी मिलती थी।चौक में हर साल कृष्ण जन्मोत्सव मनाया जाता था जिसमें एक छोटी मटकी को माखन से भरकर ऊपर लटका दिया जाता था फिर हम बच्चे और हमारे से बड़े लोग मिलकर छोटी मटकी को फोड़ते थे यह उत्सव इतना अच्छा होता था कि हम पूरी रात गाना गाते और नाचते रहते थे कृष्ण जन्मोत्सव के दिन मुझे आज भी मेरा बचपन याद आ जाता है| बचपन में हमारे घर में गाय, भैंस और बकरियां होती थी जिनकी छोटे बच्चों के साथ हम बहुत खेलते थे हमारे घर में एक शेरू नाम का कुत्ता भी था जिसे हम बहुत प्यार करते थे वह भी हमारा को ख्याल रखता था।

वह दिन मुझे आज भी बहुत याद आता है क्योंकि मैं रास्ता भूल जाने के कारण बहुत रोने लगा था मेरा बचपन बहुत ही अच्छा रहा है बचपन में मैंने खूब मस्तियां की है जिनकी मीठी यादें आज भी मेरे मस्तिक में बची हुई है आज शहर की इस गुमनाम जिंदगी में भी रस तब घुल आता है जब मैं छोटे बच्चों को खेलते हैं और शैतानियां करते देखता हूं।

*** गतिविधि- कंचे का अथवा अप्पू का चित्र बनाओ।**

बाल महाभारत
पाठ 21 -25

प्रश्न-1 राजकुमार उत्तर ने बृहन्नला से क्या कहा?

उत्तर- राजकुमार उत्तर ने बृहन्नला से कहा"बृहन्नला, मुझे बचाओ इस संकट से" मैं तुम्हारा बड़ा उपकार मानूँगा।"

प्रश्न-2 दुर्योधन को कैसे पता चला कि पांडव मत्स्य देश में छिपे हैं?

उत्तर- हस्तिनापुर में कीचक के मारे जाने की खबर से दुर्योधन ने अनुमान लगाया कि पांडव मत्स्य देश में ही छिपे हैं और हो-न-हो कीचक का वध भीम ने ही किया होगा।

प्रश्न-3 सुशर्मा कौन थे और वह दुर्योधन का साथ क्यों देना चाहते थे?

उत्तर- सुशर्मा त्रिगर्त देश के राजा थे। वह दुर्योधन का साथ इसलिए देना चाहते थे क्योंकि मत्स्य देश के राजा विराट उसके शत्रु थे और इस अवसर का लाभ उठाकर वह उससे अपना पुराना बैर चुकाना चाहते थे।

प्रश्न-4 शंख की ध्वनि को सुनकर द्रोण ने क्या शंका व्यक्त की?

उत्तर-द्रोण ने कहा- "मालूम होता है, यह तो अर्जुन ही आया है।"

प्रश्न-5 दुर्योधन ने पितामह भीष्म को संधि के संबंध में क्या कहा?

उत्तर- दुर्योधन ने कहा

पूज्य पितामह," मैं संधि नहीं चाहता हूँ। राज्य तो दूर रहा, मैं तो एक गाँव तक पांडवों को देने के लिए तैयार नहीं हूँ।"

प्रश्न-6 किसने किससे कहा?

"**कर्ण! मूर्खता की बातें न करो। हम सबको एक साथ मिलकर अर्जुन का मुकाबला करना होगा।**"

कृपाचार्य ने कर्ण से कहा ।

प्रश्न-7 राजकुमार उत्तर को अर्जुन से कंक के बारे में क्या मालूम हो चुका था?

उत्तर- राजकुमार उत्तर को अर्जुन से मालूम हो चुका था कि कंक तो असल में युधिष्ठिर ही हैं।

प्रश्न-8 राजकुमार उत्तर के बारे में राजा विराट को क्या भ्रम हुआ?

उत्तर- राजकुमार उत्तर के बारे में राजा विराट को भ्रम हुआ कि विख्यात कौरव-वीरों को उनके बेटे ने अकेले ही लड़कर जीत लिया।

प्रश्न-9 कंक के मुख से खून बहता देखकर राजकुमार उत्तर क्यों चकित रह गया?

उत्तर कंक के मुख से खून बहता देखकर राजकुमार उत्तर चकित रह गया क्योंकि उसे अर्जुन से मालूम हो चुका था कि कंक तो असल में युधिष्ठिर ही हैं।

प्रश्न-10 भीष्म ने युधिष्ठिर के संधि प्रस्ताव को सुनकर क्या सलाह दी?

उत्तर - भीष्म ने सलाह दी कि पांडवों को उनका राज्य वापस देना ही न्यायोचित होगा।

प्रश्न-11 संधि प्रस्ताव के विषय में अंत में धृतराष्ट्र ने क्या निश्चय किया?

उत्तर- सारे संसार की भलाई को ध्यान में रखकर धृतराष्ट्र ने अपनी तरफ़ से संजय को दूत बनाकर पांडवों के पास भेजने का निश्चय किया।

प्रश्न-12 युधिष्ठिर ने संजय द्वारा धृतराष्ट्र को क्या संदेश भेजा?

उत्तर- युधिष्ठिर ने संजय द्वारा धृतराष्ट्र को संदेश भेजा कि "कम-से-
कम हमें पाँच गाँव ही दे दें। हम पाँचों भाई इसी से संतोष कर लेंगे और संधि करने को तैयार होंगे।"

पाठ 13 एक तिनका

*** कविता का सार**

प्रस्तुत कविता में कवि ने कभी भी घमंड नहीं करने की सलाह दी है क्योंकि घमंडी का घमंड़ एक न एक दिन टूट ही जाता है।

*** शब्दार्थ**

घमंड -अहंकार
ऐंठ- अकड़
मंडेर- छत का किनारा
झिझक- हिचकिचाना
ढब- तरीका

***अतिलघु उत्तरीय प्रश्न**

1) कवि छत की मुंडेर पर किस भाव में खड़ा था?

उत्तर- कवि छत की मुंडेर पर घमंड से भरे हुए भाव में खड़ा था।

2) कवि की बेचैनी का क्या कारण था?

उत्तर- कवि की आँख में तिनका गिर जाने के कारण वह बेचैन हो गया और उसकी आँख लाल हो गई व दुखने लगी।

3) आस-पास के लोगों ने क्या उपहास किया?

उत्तर- आस-पास के लोग कपड़े की नोंक से कवि की आँख में पड़ा तिनका निकालने का प्रयास करने लगे।

*** लघु उत्तरीय प्रश्न**

1) तिनके से कवि की क्या हालत हो गई?

उत्तर- एक तिनके ने कवि को बेचैन कर दिया था। वह तड़प उठा। थोड़ी देर में उसकी आँखें लाल हो गईं और दुखने लगीं। कवि की सारी ऐंठ और अहंकार गायब हो गया।

2) तिनकेवाली घटना से कवि को क्या प्रेरणा मिली?

उत्तर- तिनकेवाली घटना से कवि समझ गया कि मनुष्य को कभी घमंड नहीं करना चाहिए। एक तिनके ने हमें बेचैन कर दिया। और हमारी औकात बता दिया, उन्हें यह बात भी समझ में आ गई कि उन्हें परेशान करने के लिए एक तिनका ही काफ़ी है। अतः उसे किसी बात पर घमंड नहीं करना चाहिए।

*** दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

1) इस कविता से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर- इस कविता से यह प्रेरणा मिलती है कि मनुष्य को कभी अहंकार नहीं करना चाहिए। एक तिनका कवि के आँख में जाने। के बाद उनका घमंड चूर-चूर हो गया। अतः अपने उपलब्धि पर अहंकार आ जाना सही नहीं है। हमें सदैव घमंड करने से बचना चाहिए।

2) आँख में तिनका पड़ने के बाद घमंडी की क्या दशा हुई?

उ- तिनका पड़ने के बाद घमंडी की दशा खराब हो गई। तिनके की चुभन से वह बेचैन हो गया।दर्द के कारण वह अपनी आँख रगड़ने लगा। उसकी आँख लाल हो गई। एक तिनके के आगे वह विवश हो गया।

3) हमें घमंड क्यों नहीं करना चाहिए?

उ- हमें घमंड नहीं करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपने घमँड में अकड़ा रहता है तो उसकी अकड़ तोड़ने के लिए एक तिनका ही काफ़ी होता है।

व्याकरण

*** प्रत्यय-**

जो शब्दांश, शब्दों के अंत में जुड़कर अर्थ में परिवर्तन लाये, प्रत्यय कहलाते है।

दूसरे अर्थ में - शब्द निर्माण के लिए शब्दों के अंत में जो शब्दांश जोड़े जाते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय दो शब्दों से मिलकर बना होता है – प्रति + अय। प्रति का अर्थ होता है 'साथ में, पर बाद में' और अय का अर्थ होता है 'चलने वाला'। **अत: प्रत्यय का अर्थ होता है**, साथ में पर बाद में चलने वाला। प्रत्यय उपसर्गों की तरह अविकारी शब्दांश है, जो शब्दों के बाद जोड़े जाते है।

प्रत्यय का अपना अर्थ नहीं होता और न ही इनका कोई स्वतंत्र अस्तित्व होता है। प्रत्यय अविकारी शब्दांश होते हैं जो शब्दों के बाद में जोड़े जाते है।

जैसे -

समाज + इक = सामाजिक
सुगन्ध + इत = सुगन्धित
भूलना + अक्कड़ = भुलक्कड़
मीठा + आस = मिठास
भला + आई = भलाई

प्रत्यय	**धातु**	**कृदंत-रूप**
आऊ	टिक	टिकाऊ
आक	तैर	तैराक
आका	लड़	लड़का
आड़ी	खेल	खिलाड़ी
आलू	झगड़	झगड़ालू
इया	बढ़	बढ़िया
इयल	अड़	अड़ियल
इयल	मर	मरियल
ऐत	लड़	लड़ैत
ऐया	बच	बचैया

प्रत्यय	धातु	कृदंत-रूप
ओड़	हँस	हँसोड़
ओड़ा	भाग	भगोड़ा

लेखन–विभाग

सूचना–पत्र

*** आप शांति विद्या निकेतन, प्रशांत विहार, दिल्ली की छात्रा ख़ुशी मेहरा हैं। विद्यालय में आपका परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम हो गया है। इस विषय पर 20-से-30 शब्दों में सूचना लिखे।**

सूचना

शांति विद्या निकेतन, प्रशांत विहार, दिल्ली

दिनांक - 24/07/2019

परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम हो जाना

सभी को यह सूचित किया जाता है कि 22/07/2019 को विद्यालय के खेल परिसर में मेरा परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम हो गया है। इस पर मेरी फोटो के साथ मेरा अनुक्रमांक 2367528 है। यदि यह किसी को भी मिले तो मुझे लौटाने की कृपा करें।

ख़ुशी मेहरा

कक्षा- 7

*** गतिविधि– कविता का चित्र बनाओ।**

पाठ 14 खानपान की बदलती तस्वीरें

*** शब्दार्थ**

मिश्रित- मिली-जुली
सकारातमक - अच्छा
बदलाब- परिवर्तन
कामकाजी- काम करने वाली
विधियाँ- ढंग
सुयोग- अच्छा अवसर
तबादला- बदली
अचरज-आश्चर्य
विस्तार- फैलाव
आम- सामान्य

*** अतिलघु उत्तरीय प्रश्न**

1) **उत्तर भारत में किस बात में बदलाव आया है?**

उत्तर- उत्तर भारत में खान-पान की संस्कृति में बदलाव आया है।

2) **आजकल बड़े शहरों में किसका प्रचलन बढ़ गया है?**

उत्तर- आजकल बड़े शहरों में फ़ास्ट फूड चाइनीज नूडल्स, बर्गर, पीजा तेज़ी से बढ़ा है।

3) **स्थानीय व्यंजनों की गुणवत्ता में क्या फ़र्क आया है? इसकी क्या वजह हो सकती है?**

उत्तर- स्थानीय व्यंजनों की गुणवत्ता में कमी आई है जिससे लोगों का आकर्षण कम हुआ है। इसका कारण है उन वस्तुओं में मिलावट किया जाना, जिनसे तैयार की जाती है।

4) **मथुरा-आगरा के कौन-से व्यंजन प्रसिद्ध रहे हैं?**

उत्तर- मथुरा के पेड़े और आगरा का दलमोट-पेठा प्रसिद्ध है।

*** लघु उत्तरीय प्रश्न**

1) स्थानीय व्यंजनों के प्रसार को प्रश्रय कैसे मिली?

उत्तर- आज़ादी के बाद उद्योग-धंधों, नौकरियों, तबादलों "स्थानांतरण" के कारण लोगों का एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में जाने से मिश्रित व्यंजन संस्कृति का विकास हुआ। उसके कारण भी खानपान की चीजें किसी एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में पहुँची हैं।

2) **खानपान संस्कृति का "राष्ट्रीय एकता" में क्या योगदान है?**

उत्तर- खानपान संस्कृति का राष्ट्रीय एकता में महत्त्वपूर्ण योगदान है। खाने-पीने के व्यंजनों का प्रभाव एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में बढ़ता जा रहा है। उदाहरण के तौर पर उत्तर भारत के व्यंजन दक्षिण व दक्षिण के व्यंजन उत्तर भारत में अब काफ़ी प्रचलित हैं। इससे लोगों के मेलजोल भी बढ़ता जा रहा है जिससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है।

3) **स्थानीय व्यंजनों का पुनरुद्धार क्यों ज़रूरी है?**

उत्तर- स्थानीय व्यंजन किसी न किसी स्थान विशेष से जुड़े हैं। वे हमारी संस्कृति की धरोहर हैं। उनसे हमारी पसंद, रुचि और पहचान होती है। इसलिए भारतीय व्यंजनों का पुनरुद्धार आवश्यक है क्योंकि पश्चिमी प्रभाव के कारण अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं। अतः इनको पुनः प्रचलित करने की आवश्यकता है।

*** दीर्घ प्रश्न**

1) खानपान की नई संस्कृति का नकारात्मक पहलू क्या है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- लेखक का कहना है कि मिश्रित संस्कृति से व्यंजन का अलग और वास्तविक स्वाद का मज़ा हम नहीं ले पाते हैं। सब गड्डमड्ड हो जाता है। कई बार खानपान की नवीन मिश्रित संस्कृति में हम कई बार चीजों का सही स्वाद लेने से भी। वंचित रह जाते हैं, क्योंकि हर चीज़ खाने का एक अपना तरीका और उसका अलग स्वाद होता है। प्रायः सहभोज या । पार्टियों में हम विभिन्न तरीके के व्यंजन प्लेट में परोस लेते हैं ऐसे में हम किसी एक व्यंजन का सही मजा नहीं ले पाते। हैं। स्थानीय व्यंजन हमसे दूर होते जा रहे हैं। नई पीढ़ी को इसका ज्ञान नहीं है और पुरानी पीढ़ी भी धीरे-धीरे इसे भुलाती जा रही है। यह खानपान की नवीन संस्कृति के नकारात्मक पक्ष हैं।

व्याकरण

किसी भी वाक्य को लिखने में प्रयुक्त वर्णों के क्रम को वर्तनी या अक्षरी कहते हैं।
वाक्य भाषा की महत्वपूर्ण इकाई होता है लिखने या बोलने के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे द्वारा जो कुछ लिखा या कहा जाए, वह बिल्कुल स्पष्ट सार्थक और व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध हो।

अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**
हिन्दी के प्रचार में आज-भी बड़े-बड़े संकट हैं।	हिन्दी के प्रचार में आज-भी बड़े-बड़े संकट हैं।
सीता ने गीत की दो-चार लड़ियाँ गायीं।	सीता ने गीत की दो-चार कड़ियाँ गायीं।
पतिव्रता नारी को छूने का उत्साह कौन करेगा।	पतिव्रता नारी को छूने का साहस कौन करेगा।
कृषि हमारी व्यवस्था की रीढ़ है।	कृषि हमारी व्यवस्था का आधार है।
प्रेम करना तलवार की नोक पर चलना है।	प्रेम करना तलवार की धार पर चलना है।
मैं रविवार के दिन तुम्हारे घर आऊँगा।	मैं रविवार को तुम्हारे घर आऊँगा।
कुत्ता रेंकता है।	कुत्ता भौंकता है।

मुझे सफल होने की निराशा है।	मुझे सफल होने की आशा नहीं है।

लेखन विभाग
पत्र–लेखन

*** मित्र को परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर बधाई पत्र|**

परीक्षा भवन,
अ. ब. स.
20-जून-2020
प्रिय मित्र दीपक,
सदा सुखी रहो।
मैं कुशल-मंगल हूँ और आशा करता हूँ कि वहाँ पर भी सभी कुशल-मंगल होंगें। काफी समय हो गया था न तो तुमसे बात हो पाई और न ही तुम्हारे घर पर किसी से बात कर पाया।
तुम्हारे पिता को फोन किया, तो उनसे ज्ञात हुआ की तुम बोर्ड परीक्षा में मुरादाबाद जिले में प्रथम आये हो। इस समाचार को सुनकर मन ख़ुशी से भर गया। मुझे तो पहले से ही विश्वास था की तुम प्रथम श्रेणी में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होंगे लेकिन यह जानकार की तुमने परीक्षा में प्रथम श्रेणी के साथ-साथ जिले में प्रथम स्थान भी प्राप्त किया है ,मेरी प्रसन्नता की सीमा न रही। इस परीक्षा के लिए तुम्हारे परिश्रम और नियमितता ने ही वास्तव में ऊँचाई तक पहुँचाया है। मुझे पूरी आशा थी की तुम्हारा परिश्रम रंग दिखायेगा और मेरा अनुमान सच साबित हुआ। तुमने प्रथम स्थान प्राप्त कर यह सिद्ध कर दिया की दृढ संकल्प और कठिन परिश्रम से कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है।
मैं सदैव यह कामना करूँगा की तुम्हें जीवन में हर परीक्षा में प्रथम आने का सौभाग्य प्राप्त हो और तुम इसी प्रकार परिवार और विद्यालय का गौरव बढ़ाते रहो। इस प्रकार मेहनत करते रहो और सभी को प्रसन्नता प्रदान करते रहो।
तुम्हारा मित्र
आकाश

*** गतिविधि– अपने मनपसंद खाने का चित्र बनाओ।**

पाठ 16 भोर और बरखा
- (मीराबाई)

*** शब्दार्थ**

रजनी- रात
किवार- दरवाजा
कोलाहल-शोर
बदरिया- बादल
भनक- खबर
दामिनी- बिजली
मेहा -बादल
सबद- शब्द
उचारे- कहना
गउवन- गायें
तारै- उदधार करना

*** अतिलघु उत्तरीय प्रश्न**

1) मीरा किसकी दीवानी थी?

उत्तर- मीरा श्रीकृष्ण की दीवानी थी।

2) गोपियाँ दही क्यों बिलो रही थीं?

उत्तर- गोपियाँ दही बिलोकर मक्खन निकालना चाह रही थीं।

3) ग्वाल-बालों के हाथ में क्या वस्तु थी?

उत्तर- ग्वाल-बालों के हाथ में माखन-रोटी थी।

4) कैसी बूंदें पड़ रही थीं।

उत्तर- नन्हीं-नन्हीं बूंदे पड़ रही थीं।

5) मीरा को सावन मन भावन क्यों लगने लगा?

उत्तर- मीरा को सावन मन भावन लगने लगा, क्योंकि सावन के आते ही उसे श्रीकृष्ण के आने की भनक हो गई।

*** लघु उत्तरीय प्रश्न**

1) माता यशोदा अपने कृष्ण को किस प्रकार और क्या कहकर जगा रही है?

उत्तर- माता यशोदा अपने ललना श्रीकृष्ण को तरह-तरह के संकेत देकर जगाती है। वह अपने पुत्र से कहती है कि हे वंशीवाले प्यारे कन्हा! जागो रात बीत चुकी है। सुबह हो गई है। घरों के दरवाजे खुल गए हैं गोपियाँ दही बिलो रही हैं। ग्वाल बाल द्वार पर खड़े होकर तुम्हारी जयकार कर रहे हैं। यानी वे गायों को लेकर जाने की तैयारी में हैं।

2) मीरा ने सावन का वर्णन किस प्रकार किया है?

उत्तर- कविता के दूसरे पद में मीरा ने सावन का वर्णन अनुपम ढंग से किया है। वे कहती हैं कि सावन के महीने में मन-भावन वर्षा हो रही है। सावन के आते ही मन में उमंग आ जाती है। उसे श्रीकृष्ण के आने की भनक लग जाती है। चारों ओर से बादल उमड़-घुमड़ कर आ रहे हैं, बिजली चमक रही है, नन्हीं-नन्हीं बूंदें पड़ रही हैं तथा मंद-मंद शीतल वायु चल रही है।

*** दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

1)पाठ के आधार पर सावन की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- सावन के महीने में बादल चारों तरफ़ उमड़-घुमड़कर आते हैं। बिजली अपनी छटा बिखेरती है। बारिश ज़ोरों की होने लगती है। नन्हीं-नन्हीं बूंदे बरसने लगती हैं और ठंडी-शीतल हवा बहने लगती है।

2)'बंसीवारे ललना' 'मोरे प्यारे लाल जी' कहते हुए, यशोदा किसे जगाने का प्रयास करती हैं और कौन-कौन-सी बातें कहती हैं?

उत्तर- 'बंसीवारे ललना' 'मोरे प्यारे' व 'लाल जी' कहते हुए यशोदा श्रीकृष्ण को जगाने का प्रयास कर रही हैं। वह उनसे कहती हैं कि मेरे लाल जागो, रात बीत गई है, सुबह हो गई है। सबके घरों के दरवाजे खुल गए

हैं। गोपियाँ दही बिलो रही हैं। और तुम्हारे खाने के लिए मनभावन मक्खन निकाल रही हैं। तुम्हें जगाने के लिए सभी देव और मानव खड़े हैं जो तुम्हारे दर्शनों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। तुम्हारे सखा, ग्वाल-बाल तुम्हारी जय-जयकार कर रहे हैं। अतः तुम अब उठ जाओ।

व्याकरण

*** कारक की परिभाषा –**

कारक शब्द का अर्थ होता है- क्रिया को करने वाला। क्रिया को करने में कोई न कोई अपनी भूमिका निभाता है, उसे कारक कहते है। अथार्त संज्ञा और सर्वनाम का क्रिया के साथ दूसरे शब्दों में संबंध बताने वाले निशानों को कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उनका Üसंज्ञा या सर्वनाम काÝ सम्बन्ध सूचित हो, उसे 'कारक' कहते हैं।

उदाहरण –

श्रीराम **ने** रावण **को** बाण **से** मारा।

इस वाक्य में प्रत्येक शब्द एक-दूसरे से बँधा है और प्रत्येक शब्द का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में क्रिया के साथ है।

l) कर्ता कारक

जो वाक्य में कार्य करता है, उसे कर्ता कहा जाता है। अथार्त वाक्य के जिस रूप से क्रिया को करने वाले का पता चले, उसे कर्ता कहते हैं।

दूसरे शब्द में - क्रिया का करने वाला 'कर्ता' कहलाता है।

जैसे -

- राम ने रावण को मारा।
  लड़की स्कूल जाती है।

पहले वाक्य में क्रिया का कर्ता राम है। इसमें "ने" कर्ता कारक का विभक्ति-चिह्न है। इस वाक्य में "मारा"भूतकाल की क्रिया है। "ने"का प्रयोग प्रायः भूतकाल में होता है। दूसरे वाक्य में वर्तमानकाल की क्रिया का कर्ता लड़की है। इसमें "ने" विभक्ति का प्रयोग नहीं हुआ है।

2) कर्म कारक

जिस संज्ञा या सर्वनाम पर क्रिया का प्रभाव पड़े, उसे कर्म कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में - वाक्य में क्रिया का फल जिस शब्द पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते है।

इसकी विभक्ति 'को' है। लेकिन कहीं-कहीं पर कर्म का चिन्ह लोप होता है।

जैसे- माँ बच्चे को सुला रही है।

इस वाक्य में सुलाने की क्रिया का प्रभाव बच्चे पर पड़ रहा है। इसलिए 'बच्चे को' कर्म कारक है।

- राम ने रावण को मारा।
  यहाँ 'रावण को' कर्म है।
- बुलाना, सुलाना, कोसना, पुकारना, जमाना, भगाना आदि क्रियाओं के प्रयोग में अगर कर्म संज्ञा हो, तो 'को' विभक्ति जरुर लगती है।

जैसे -

(i) अध्यापक, छात्र को पीटता है।

(ii) सीता फल खाती है।

(iii) ममता सितार बजा रही है।

(iv) राम ने रावण को मारा।

(v) गोपाल ने राधा को बुलाया।

(vi) मेरे द्वारा यह काम हुआ।

3) करण कारक

जिस वस्तु की सहायता से या जिसके द्वारा कोई काम किया जाता है, उसे करण कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में - वाक्य में जिस शब्द से क्रिया के सम्बन्ध का बोध हो, उसे करण कारक कहते है। इसकी विभक्ति 'से' है।

'करण' का अर्थ है 'साधन'। अतः 'से' चिह्न वहीं करणकारक का चिह्न है, जहाँ यह 'साधन' के अर्थ में प्रयुक्त हो।

जैसे -

हम आँखों से देखते है।

इस वाक्य में देखने की क्रिया करने के लिए आँख की सहायता ली गयी है। इसलिए आँखों से करण कारक है।

4) संप्रदान कारक– सम्प्रदान कारक का अर्थ होता है– देना। जिसके लिए कर्ता काम कर्ता है उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान कारक के विभक्ति चिन्ह के लिए और को होता है। इसको किसके लिए प्रश्नवाचक शब्द लगाकर भी पहचाना जा सकता है। समान्य रूप से जिसे कुछ दिया जाता है या जिसके लिए कोई कार्य किया जाता है उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं।

(i) **गरीबों** को खाना दो।
(ii) **मेरे** लिए दूध लेकर आओ।
(iii) माँ **बेटे** के लिए सेब लायी।
(iv) अमन ने **श्याम** को गाड़ी दी।
(v) मैं **सूरज** के लिए चाय बना रहा हूँ।
(vii) **भूखे** के लिए रोटी लाओ।
(viii) वे **मेरे** लिए उपहार लाये हैं।
(ix) सोहन **रमेश** को पुस्तक देता है।

लेखन बोध

*** साक्षरता के विषय पर छात्र और अध्यापक के बीच संवाद लेखन**

अध्यापक :आज मैं आप सब को साक्षरता के बारे में बताता हूँ, साक्षरता हम सब के जीवन में बहुत जरूरी है|

छात्र: साक्षरता का अर्थ विस्तार से बताए?

अध्यापक : साक्षरता का अर्थ होता है , शिक्षित होना , पढ़ाई करना , स्कूल जाना | साक्षर होने से हमें सब के बारे में जानकारी होती है,और हम आज़ादी से जी सकते है |

छात्र: शिक्षा हमारे लिए बहुत जरूरी है |

अध्यापक : सही कह रहे हो शिक्षा हमारे लिए बहुत जरूरी है , बिना शिक्षा के हमारा जीवन व्यर्थ है |

छात्र: कई जगह पर तो अभी भी लोग बच्चों को शिक्षा के लिए नहीं भेजते|

अध्यापक : सभी जो उजागर करने ले लिए सरकार ने साक्षरता अभियान पर विज्ञापन चलाया है ताकी सभी को घर-घर तक पता चले सब पढ़े,और आगे बढ़े और उन्नति करें

छात्र: शिक्षा लेने का हक सब को है , हम किसी भी उम्र में सिख सकते है |

अध्यापक: बौद्धिक विकास के लिए भी पूर्ण रूप से शिक्षित होना बहुत आवश्यक है। कुछ पढ़ना हो लिखना हो , किसी को समझना हो , दूसरे देश जाना हो , बहार जाना इसके लिए हमें शिक्षित होना बहुत जरूरी है |

छात्र: आपने बहुत अच्छा समझाया हम सब याद रखेंगे |
अध्यापक : मन लगा कर पढ़ाई करो और अपने लक्ष्य को प्राप्त करो |

*** गतिविधि- मीराबाई का चित्र बनाओ अथवा चिपकाओ।**

बाल महाभारत
पाठ 26-31

प्रश्न-1 पहले श्रीकृष्ण किसके भवन में गए?
उत्तर – पहले श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के भवन में गए।
प्रश्न-2 श्रीकृष्ण हस्तिनापुर किस उद्देश्य से गए?
उत्तर - शांति की बातचीत करने के उद्देश्य से श्रीकृष्ण हस्तिनापुर गए।
प्रश्न-3 धृतराष्ट्र से मिलने के बाद श्रीकृष्ण किससे मिलने गए?
उत्तर – धृतराष्ट्र से विदा लेकर श्रीकृष्ण विदुर के भवन में गए। कुंती वहीं कृष्ण की प्रतीक्षा में बैठी थी।
प्रश्न-4 श्रीकृष्ण को ठहराने का प्रबंध कहाँ किया गया और क्यों?
उत्तर- दुःशासन का भवन दुर्योधन के भवन से अधिक ऊँचा और सुंदर था। इसलिए धृतराष्ट्र ने आज्ञा दी कि उसी भवन में श्रीकृष्ण को ठहराने का प्रबंध किया जाए।

प्रश्न / उत्तर
प्रश्न-1 कौरवों की सेना के नायक कौन थे?
उत्तर - कौरवों की सेना के नायक भीष्म पितामह थे ।
प्रश्न-2 किसे पांडवों की सेना का नायक बनाया गया?
उत्तर – वीर कुमार धृष्टद्युम्न को पांडवों की सेना का नायक बनाया गया।
प्रश्न-3 रुक्मी के अपमानित होने का कारण क्या था?
उत्तर - रुक्मी कर्तव्य से प्रेरित होकर नहीं, बल्कि अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के उद्देश्य से कुरुक्षेत्र गया और अपमानित हुआ।
प्रश्न-4 युद्ध के समय कौन-कौन से राजा युद्ध में सम्मिलित नहीं हुए और तटस्थ रहे?
उत्तर- युद्ध के समय सारे भारतवर्ष में दो ही राजा युद्ध में सम्मिलित नहीं हुए और तटस्थ रहे एक बलराम और दूसरे भोजकट के राजा रुक्मी।

प्रश्न / उत्तर
प्रश्न-1 कौरव-सेना में कौन से वीर अर्जुन का मुकाबला कर सकते थे?
उत्तर - सारी कौरव-सेना में तीन ही ऐसे वीर थे, जो अर्जुन का मुकाबला कर सकते थे- भीष्म, द्रोण और कर्ण।
प्रश्न-2 युद्ध के समय पांडवों और कौरवों की सेना के अग्रभाग में कौन रहा करते थे?
उत्तर - कौरवों की सेना के अग्रभाग पर प्रायः दुःशासन ही रहा करता था और पांडवों की सेना के आगे भीमसेन।
प्रश्न-3 पहले दिन की लड़ाई में हुई दुर्गति से पांडवों ने क्या सबक लिया?
उत्तर- पहले दिन की लड़ाई में पांडव-सेना की जो दुर्गति हुई थी, उससे सबक लेकर पांडव सेना के नायक धृष्टद्युम्न ने दूसरे दिन बड़ी सतर्कता के साथ व्यूह रचना की और सैनिकों का साहस बँधाया।

प्रश्न / उत्तर
प्रश्न-1 घटोत्कच कौन था?
उत्तर – घटोत्कच भीम का पुत्र था।
प्रश्न-2 चौथे दिन के युद्ध में दुर्योधन के कितने भाई मारे गए?
उत्तर - चौथे दिन के युद्ध में दुर्योधन के आठ भाई मारे गए।
प्रश्न-3 घटोत्कच के क्रोध का क्या कारण था?
उत्तर- अपने पिता को मूर्च्छित देखकर घटोत्कच को क्रोध आ गया।
प्रश्न-4 धृतराष्ट्र को कुरुक्षेत्र के मैदान का आँखों देखा हाल कौन सुनाता था?
उत्तर – संजय कुरुक्षेत्र के मैदान का आँखों देखा हाल धृतराष्ट्र को सुनाता था।

प्रश्न / उत्तर
प्रश्न-1 कुमार शंख की मृत्यु कब हुई?

उत्तर – सांतवें दिन के युद्ध में कुमार शंख की मृत्यु कब हुई।

प्रश्न-2 आठवें दिन के युद्ध में भीमसेन ने धृतराष्ट्र के कितने बेटों का वध किया?

उत्तर – आठवें दिन के युद्ध में भीमसेन ने धृतराष्ट्र के आठ बेटों का वध किया।

प्रश्न-3 आठवें दिन के युद्ध में अर्जुन क्यों शोक-विह्वल हो उठा?

उत्तर- आठवें दिन के युद्ध में एक ऐसी घटना हुई कि जिससे अर्जुन शोक विह्वल हो उठा। उसका लाड़ला, साहसी और वीर बेटा इरावान, जो एक नागकन्या से पैदा हुआ था, उस दिन उसका वध हो गया।

पाठ 17 वीर कुँवर सिंह
(धनराज)

*** शब्दार्थ**

अभिराम– सुंदर
वयोवृदध–बहुत बूढी
रजवाड़े– छोटी–छोटी रियासत
देशव्यापी– देश में फेली
गुप्त ढंग– छुपा कर
जयघोष– जय का नारा
मुक्तिवाहिनी– मुक्ति रूपी नाव
परासत–हारना
कीत्ति–यश
भीषण– भयंकर
दमन– कुचलना
निर्मित– बना हुआ
उलझन– कठिनाई
पतन– विनाश
कुशल– निपुण
शौर्य– बहादुरी
अरिदल– शत्रुओं का समूह
प्रशस्ति– प्रशंसा

*** अतिलघु उत्तरीय प्रश्न**

1)वीर कुंवर सिंह का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर- वीर कुंवर सिंह का जन्म 1782 ई० में बिहार में शाहाबाद जिले के जगदीशपुर में हुआ था।

2) बाबू कुँवर सिंह ने रियासत की जिम्मेदारी कब सँभाली?

उत्तर- बाबू कुँवर सिंह ने अपने पिता की मृत्यु के बाद 1827 में रियासत की जिम्मेदारी सँभाली।

3) कुँवर सिंह किस उद्देश्य से आज़मगढ़ पर अधिकार किया था?

उत्तर- वीर कुंवर सिंह आजमगढ़ पर अधिकार कर इलाहाबाद और बनारस पर आधिपत्य स्थापित करना चाहते थे, वहाँ अंग्रेजों को पराजित कर अंततः उनका लक्ष्य जगदीशपुर पर अधिकार करना था।

4) सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'झाँसी की रानी' में किन-किन स्वतंत्रता सेनानियों के नाम आए हैं?

उत्तर- झाँसी की रानी' कविता में रानी लक्ष्मीबाई के अलावे नाना धुंधूपंत, तात्या टोपे, अज़ीमुल्ला खान, अहमद शाह मौलवी तथा वीर कुंवर सिंह के नाम आए हैं।

5) सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की शुरुआत कब और किसने की?

उत्तर- सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की शुरुआत मंगल पांडे ने मार्च 1857 में बैरकपुर सैनिक छावनी से की थी।

*** लघु उत्तरीय प्रश्न**

1) 1857 की क्रांति की क्या उपलब्धियाँ थीं?

उत्तर- 1857 की क्रांति की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि यह आंदोलन देश को आजादी पाने की दिशा में एक प्रथम चरण था। इस क्रांति के परिणामस्वरूप लोगों की आँखें खुल गईं और उनमें राष्ट्रीय एकता और स्वाधीनता की पृष्ठभूमि का विकास हुआ। इस आंदोलन की उपलब्धि सांप्रदायिक सौहार्द की भावना के

विकास के रूप में हुआ। हिंदू-मुस्लिम एकता बढ़ी। राष्ट्रीय भावना लोगों में जाग्रत हुई।

2)मंगल पांडे के बलिदान के बाद स्वतंत्रता सेनानियों ने क्रांति को कैसे आगे बढ़ाया?

उत्तर- मंगल पांडे के बलिदान के बाद मेरठ के आस-पास के स्वतंत्रता सेनानियों ने क्रांति को आगे बढ़ाया और दिल्ली पर विजय प्राप्त की। 14 मई को दिल्ली पर अधिकार करने के बाद उन्होंने बहादुरशाह ज़फ़र को अपना सम्राट घोषित किया।

3) आज़मगढ़ की ओर जाने का वीर कुंवर सिंह का क्या उद्देश्य था?

उत्तर- वीर कुंवर सिंह का आजमगढ़ जाने का उद्देश्य था, इलाहाबाद तथा बनारस पर आक्रमण कर शत्रुओं को पराजित करना। उस पर अपना अधिकार जमाना। अंततः उन्होंने इन पर अधिकार करने के बाद जगदीश पर भी कब्जा जमा लिया। उन्होंने अंग्रेजों को दो बार हराया। उन्होंने 22 मार्च 1858 को आजमगढ़ पर भी अधिकार कर लिया। उन्होंने अंग्रेजों को दो बार हराया। वे 23 अप्रैल 1858 को स्वाधीनता की विजय-पताका फहराते हुए जगदीशपुर तक पहुंच गए।

4) वीर कुंवर सिंह ने अपना बायाँ हाथ गंगा मैया को समर्पित क्यों किया?

उत्तर- जब कुँवर सिंह शिवराजपुर नामक स्थान से सेनाओं को गंगा पार करवा रहे थे तो अंतिम नाव पर वे स्वयं बैठे थे। उसी समय उनकी खोज में अंग्रेज सेनापति डगलस आया। उसने गोलियाँ बरसानी शुरू कर दी। उसी समय दूसरे तट से अंग्रेजों की एक गोली उनके बाएँ हाथ में लगी। शरीर में जहर फैलने के डर से कुँवर सिंह ने तत्काल अपनी तलवार निकाली और हाथ काटकर गंगा में भेंट कर दिया।

*** दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

1) 1857 के आंदोलन में वीर कुंवर सिंह के योगदानों का वर्णन करें।

उत्तर- वीर कुंवर सिंह का 1857 के आंदोलन में निम्नलिखित योगदान है कुँवर सिंह वीर सेनानी थे। 1857 के विद्रोह में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया व अंग्रेजों को कदम-कदम पर परास्त किया। कुंवर सिंह की वीरता पूरे भारत द्वारा भुलाई नहीं जा सकती। आरा पर विजय प्राप्त करने पर इन्हें फौजी सलामी भी दी गई। इसके अलावे इन्होंने बनारस, मथुरा, कानपुर, लखनऊ आदि स्थानों पर जाकर विद्रोह की सक्रिय योजनाएँ बनाईं। उन्होंने विद्रोह का सफल नेतृत्व करते हुए दानापुर और आरा पर विजय प्राप्त की। जगदीशपुर में पराजित होने के बावजूद सासाराम से मिर्जापुर, रीवा, कालपी होते हुए कानपुर पहुँचे। उनकी वीरता की ख्याति दूर-दूर स्थान में पहुँच गई। उन्होंने आज़मगढ़ पर अधिकार करने के बाद अपनी मातृभूमि जगदीशपुर पर पुनः आधिपत्य जमा लिया। इस प्रकार उन्होंने मरते दम तक अपनी अमिट छाप पूरे देश पर छोड़ा।

व्याकरण

5) अपादान कारक :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी वस्तु के अलग होने का बोध हो वहाँ पर अपादान कारक होता है।

हाथ से छड़ी गिर गई।
पेड़ से आम गिरा।
चूहा बिल से बाहर निकला।

6)संबंध कारक :-

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप की वजह से एक वस्तु की दूसरी वस्तु से संबंध का पता चले उसे संबंध कारक कहते हैं।

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप की वजह से एक वस्तु की दूसरी वस्तु से संबंध का पता चले उसे संबंध कारक कहते हैं। इसके विभक्ति चिन्ह का, के, की, रा, रे, री आदि होते हैं। इसकी विभक्तियाँ संज्ञा, लिंग, वचन के अनुसार बदल जाती हैं।

जैसे -
(i) सीतापुर, मोहन का गाँव है।
(ii) सेना के जवान आ रहे हैं।
(iii) यह सुरेश का भाई है।
(iv) यह सुनील की किताब है।
(v) राम का लड़का, श्याम की लडकी, गीता के बच्चे।

7)अधिकरण कारक

शब्द के जिस रूप से क्रिया के आधार का ज्ञान होता है, उसे अधिकरण कारक कहते है। दूसरे शब्दों में – क्रिया या आधार को सूचित करनेवाली संज्ञा या सर्वनाम के स्वरूप को अधिकरण कारक कहते है।

अधिकरण का अर्थ होता है – आधार या आश्रय। संज्ञा के जिस रूप की वजह से क्रिया के आधार का बोध हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति में और पर होती है। भीतर, अंदर, ऊपर, बीच आदि शब्दों का प्रयोग इस कारक में किया जाता है।

जैसे -
(i) हरी घर में है।
(ii) पुस्तक मेज पर है।
(iii) पानी में मछली रहती है।
(iv) फ्रिज में सेब रखा है।

8)संबोधन कारक

जिन शब्दों का प्रयोग किसी को बुलाने या पुकारने में किया जाता है, उसे संबोधन कारक कहते है।

दूसरे शब्दों में – संज्ञा के जिस रूप से किसी के पुकारने या संकेत करने का भाव पाया जाता है,

जैसे -
(i) हे ईश्वर! रक्षा करो।
(ii) अरे! बच्चो शोर मत करो।
(iii) हे राम! यह क्या हो गया।

लेखन–विभाग

*** गंदगी की सूचना देते हुए नगर निगम अधिकारी को प्रत्र।**

B-4/13 अंकुर विहार, लोनी
गाजियाबाद।
दिनांक-16 अगस्त
सेवा में
नगर निगम अधिकारी
लोनी क्षेत्र, गाजियाबाद।
विषय-हमारे क्षेत्र में फैली गंदगी की सूचना हेतु पत्र।
महोदय
मैं अंकुर तथा आसपास के इलाकों में फैली गंदगी तथा सफ़ाई कर्मचारियों की अकर्मण्यता के विषय में आपको सूचित करना चाहता हूँ।
यहाँ जगह-जगह गंदगी के ढेर लगे हैं तथा गलियों में यहाँ-वहाँ कूड़ा फैला है। सफ़ाई कर्मचारी सप्ताह में एक बार भी सफ़ाई नहीं करते तथा नगर निगम की गाड़ियाँ महीनों तक दिखाई नहीं पड़तीं। चारों तरफ़ मक्खी, मच्छर

तथा बदबू का साम्राज्य है।
आशा है आप इस विषय में अवश्य कार्यवाही करेंगे।
धन्यवाद
भवदीय
ओजस्व तिवारी।

*** गतिविधि– वीर कुँवरसिंह का चित्र बनाओ**

बाल–महाभारत
पाठ 32–37

प्रश्न-1 द्रोणाचार्य द्वारा बनाया गया चक्रव्यूह किसने तोड़ा?
उत्तर – द्रोणाचार्य द्वारा बनाया गया चक्रव्यूह अभिमन्यु ने तोड़ा।
प्रश्न-2 तेरहवें दिन अर्जुन को युद्ध के लिए किसने ललकारा?
उत्तर- तेरहवें दिन संशप्तकों (त्रिगर्ता) ने अर्जुन को युद्ध के लिए ललकारा।
प्रश्न-3 तेरहवें दिन अर्जुन लड़ता हुआ किस दिशा की ओर चले गए?
उत्तर – तेरहवें दिन अर्जुन लड़ता हुआ दक्षिण दिशा की ओर चले गए।
प्रश्न-4 द्रोण ने कर्ण को अभिमन्यु पर हमला करने का कौन सा उपाय बताया?
उत्तर – द्रोण ने कर्ण के पास आकर कहा-
"इसका कवच भेदा नहीं जा सकता। ठीक से निशाना साधकर इसके रथ के घोड़ों की रास काट डालो और पी छे की ओर से इस पर अस्त्र चलाओ।"
प्रश्न / उत्तर

प्रश्न-1 युधिष्ठिर ने सात्यकि के प्रसंग में धृष्टद्युम्न से क्या कहा?
उत्तर- युधिष्ठिर धृष्टद्युम्न से बोले–"द्रुपद-कुमार! आपको अभी जाकर द्रोणाचार्य पर आक्रमण करना चाहिए, नहीं तो डर है कि कहीं आचार्य के हाथों सात्यकि का वध न हो जाए।"
प्रश्न-2 धृष्टद्युम्न ने भीमसेन को क्या विश्वास दिलाया?
उत्तर - धृष्टद्युम्न ने कहा-"तुम किसी प्रकार का चिंता न करो और निश्चित होकर जाओ। विश्वास रखो कि द्रोण मेरा वध किए बिना युधिष्ठिर को नहीं पकड़ सकेंगे।"
प्रश्न / उत्तर
प्रश्न-1 अर्जुन ने अपने प्रतिज्ञा के बारे में क्या बताया?
उत्तर – अर्जुन बोला-"वीरो! तुम सब मेरी प्रतिज्ञा जानते हो। मेरे बाणों की पहुँच तक अपने किसी भी मित्र या साथी का शत्रु के हाथों वध न होने देने का प्रण मैंने कर रखा है। इसलिए सात्यकि की रक्षा करना मेरा धर्म था।"
प्रश्न-2 भूरिश्रवा की मृत्यु कैसे हुई?
उत्तर- अर्जुन की बातें सुनकर भूरिश्रवा ने भी शांति से सिर नवाया और जमीन पर टेक दिया। इन बातों में कोई दो घड़ी का समय बीत गया था। सब लोगों के मना करते हुए भी सात्यकि ने भूरिश्रवा का सिर धड़ से अलग कर दिया।
प्रश्न / उत्तर
प्रश्न-1 मद्रराज शल्य का वध किसने किया?
उत्तर – मद्रराज शल्य का वध युधिष्ठिर ने किया।
प्रश्न-2 शकुनि का वध किसने किया?
उत्तर – शकुनि का वध सहदेव ने किया।
प्रश्न-3 कर्ण के बाद कौरव - सेना का सेनापति किसे नियुक्त किया गया?
उत्तर – कर्ण के बाद कौरव - सेना का सेनापति मद्रराज शल्य को नियुक्त किया गया।
प्रश्न-4 द्रोण के मारे जाने पर कौरव-पक्ष के राजाओं ने किसको सेनापति मनोनीत किया?
उत्तर – द्रोण के मारे जाने पर कौरव-पक्ष के राजाओं ने कर्ण को सेनापति मनोनीत किया।

पाठ 19 आश्रम का अनुमति व्यय
(मोहनदास करमचंद गाँधी)

*** शब्दार्थ**

अतिथि- मेहमान
सहपरिवार- परिवार सहित
पुस्तकालय- पुसतकों को रखने का स्थान
विभिन्न- अलग-अलग
अनुमति व्यय- अनुमान में लगाया गया खर्च
मोंगरा- लकड़ी का बड़ा हथौडा
सिवा- अलावा
चौका- रसोई

*** अतिलघु उत्तरीय प्रश्न**

1) गांधी जी कौन-सा आश्रम बना रहे थे?
उत्तर- गांधी जी अहमदाबाद में साबरमती आश्रम बना रहे थे।
2)आश्रम में शुरुआत में कितने लोग थे?
उत्तर- आश्रम में शुरुआत में चालीस लोग थे।
3)पुस्तकालय में कितनी पुस्तकें रखी जाती थीं?
उत्तर- पुस्तकालय में तीन हजार पुस्तकें रखी जाती थीं।
4)शिक्षण के सामान में कितने हथकरघों की आवश्यकता होगी?
उत्तर- पाँच-छह देशी हथकरघों की आवश्यकता होगी।

5)गांधी जी ने आश्रम की स्थापना कब की थी?

उत्तर- गांधी जी ने आश्रम की स्थापना दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद की थी।

* लघु उत्तरीय

1) गांधी जी ने आश्रम की स्थापना कब करनी चाही?

उत्तर- गांधी ने सन् 1915 में, जब वे दक्षिण अफ्रीका से लौटे तो अहमदाबाद में आश्रम बनाने की योजना बनाई।

2)गांधी जी को आश्रम के लिए कितने स्थान की ज़रूरत थी और क्यों?

उत्तर- साबरमती आश्रम में लगभग 40-50 लोगों के रहने, इनमें हर महीने दस अतिथियों के आने की संभावना, जिनमें तीन या पाँच सपरिवार आने की उम्मीद थी। अतः आश्रम में तीन रसोईघर तथा रहने के मकान के लिए 50,000 फुट क्षेत्रफल में बने मकान की आवश्यकता थी। इसके अलावे-खेती के लिए पाँच एकड़ जमीन की ज़रूरत थी, क्योंकि इतने लोगों के भोजन का सामान खरीदना कठिन था।

*** दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

1) गांधी जी ने आश्रम के अनुमानित खर्च का ब्यौरा क्यों तैयार किया?

उत्तर- गांधी जी द्वारा लिखे गए पाठ 'आश्रम का अनुमानित व्यय' से हमें सीख मिलती है कि यदि हम कोई भी कार्य करना चाहें तो सोच-समझकर पहले ब्यौरा बना लेना चाहिए ताकि उसके अनुमानित खर्च को भी जाना जा सके तथा इस हिसाब से आगे बढ़ने का रास्ता भी साफ़ दिखाई देने लगता है। गांधी जी एक ऐसे आश्रम की स्थापना कर रहे थे। इसके लिए स्थान की ज़रूरत थी, आवश्यक वस्तुओं, पुस्तकों, भोजन की व्यवस्था करने की जरूरत थी। वहाँ सत्याग्रह तथा स्वदेशी आंदोलन की योजनाएँ तैयार करनी थीं। वह आश्रम एक दो दिन के लिए नहीं, लंबे समय के लिए बनाया जा रहा था। अतः स्थायी व्यवस्था के लिए गांधी ने खर्च का लेखा-जोखा तैयार दिया।

2) गांधी जी के अनुसार आश्रम में कौन-कौन से खर्च थे? वह उसे कहाँ से जुटाना चाहते थे?

उत्तर- गांधी जी के अनुसार यदि अन्य खर्च अहमदाबाद उठा ले, तो वह खाने का खर्च जुटा लेंगे। उनके अनुसार आश्रम के मद में निम्नलिखित खर्च थे।

1. मकान और जमीन का किराया।
2. किताबों की अलमारियों का खर्च ।
3. बढ़ई के औजार।।
4. मोची के औजार।
5. चौके के सामान।
6. एक बैलगाड़ी या घोडागाड़ी।
7. एक वर्ष में भोजन का खर्च- 6000 रु०।।

व्याकरण

*** अलंकार**

अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना होता है– अलम– कार। यहाँ पर अलम का अर्थ होता है "आभूषण।"मानव समाज बहुत ही सौन्दर्योपासक है उसकी प्रवर्ती के कारण ही अलंकारों को जन्म दिया गया है। जिस तरह से एक नारी अपनी सुन्दरता को बढ़ाने के लिए आभूषणों को प्रयोग में लाती हैं उसी प्रकार भाषा को सुन्दर बनाने के लिए अलंकारों का प्रयोग किया जाता है। अथार्त जो शब्द काव्य की शोभा को बढ़ाते हैं उसे अलंकार कहते हैं।

*** अलंकार के भेद**

अलंकार के मुख्यतः दो भेद होते हैं :

1) शब्दालंकार 2) अर्थालंकार

1) शब्दालंकार

जो अलंकार शब्दों के माध्यम से काव्यों को अलंकृत करते हैं, वे शब्दालंकार कहलाते हैं। यानि किसी काव्य में कोई विशेष शब्द रखने से सौन्दर्य आए और कोई पर्यायवाची शब्द रखने से लुप्त हो जाये तो यह शब्दालंकार कहलाता है।

"भुजबल भूमि भूप बिन किन्ही"

इस उदाहरण में विशिष्ट व्यंजनों के प्रयोग से काव्य में सौंदर्य उत्पन्न हुआ है। यदि "भूमि" के बजाय उसका पर्यायवाची "पृथ्वी", "भूप" के बजाय उसका पर्यायवाची "राजा" रख दे तो काव्य का सारा चमत्कार खत्म हो जाएगा। इस काव्य पंक्ति में उदाहरण के कारण सौंदर्य है। अतः इसमें शब्दालंकार है।

2) अर्थालंकार

जब किसी वाक्य का सौन्दर्य उसके अर्थ पर आधारित होता है तब यह अर्थालंकार के अंतर्गत आता है ।

उदाहरण के लिए–

"चट्टान जैसे भारी स्वर"

इस उदाहरण में चट्टान जैसे के अर्थ के कारण चमत्कार उत्पन्न हुआ है। यदि इसके स्थान पर "शीला" जैसे शब्द रख दिए जाएं तो भी अर्थ में अधिक अंतर नहीं आएगा। इसलिए इस काव्य पंक्ति में अर्थालंकार का प्रयोग हुआ है।

लेखन–बोध

* महात्मा गांधी पर अनुच्छेद

महात्मा गांधी का जन्म गुजरात राज्य के काठियावाड़ प्रदेश में स्थित पोरबन्दर शहर में 2 अक्टूबर, 1869 ई॰ को हुआ था । उनके पिता राजकोट रियासत के दीवान के । उनकी माता बड़ी सज्जन और धार्मिक विचारों वाली महिला थी । उन्होंने बचपन से ही गांधी को धार्मिक कथायें सुना-सुना कर उन्हें सात्विक प्रवृति बना दिया था ।सात वर्ष की आयु में उन्हे स्कूल भेजा गया । स्कूल की पढ़ाई में वे औसत दर्जे के विद्यार्थी रहे । लेकिन वे अपना कक्षा मे ठीक समय पर नियमित रूप से पहुंचते थे और पाठ को मन लगाकर पढ़ते थे । मैट्रिक परीक्षा पास करने के बाद वै कॉलेज में पढ़े और बाद में कानून की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड चले गये । कुछ समय के बाद सौभाग्य से उन्हें एक बड़ा भारतीय व्यापारी मिला, जिसका दक्षिण अफ्रीका में बड़ा कारोबार था । उसे अपनी किसी उलझे मुकदमे में दक्षिण अफ्रीका में एक अच्छे वकील की जरूरत थी । उसने गांधी जी काफी बड़ी फीस देकर इस काम को करने को तैयार कर लिया । उसने गाँधी जी को दक्षिण अफ्रीका बुला लिया ।दक्षिण अफ्रीका पहुंच कर उन्होंने भारत मूल के लोगो को बड़ी दयनीय अवस्था में देखा । उन्होंने उनकी दशा सुधारने का फैसला कर लिया और भारतीयों को उनके अधिकारों का बोध कराया । उन्होने उनमे जागृति लाकर उन्हें संगठित किया ।उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के लिए जिस कांग्रेस की स्थापना की, आज भी वह वहां की प्रमुख पार्टी है । गांधी जी और उनके साथियों को कैद करके सजायें दी गई, लेकिन उन्होने अपनी लड़ाई नहीं छोड़ी । इसके साथ ही उन्होंने काग्रेस पार्टी के सामने-समाज सुधार और हिन्दू-मुस्लिम एकता जैसे रचनात्मक कार्यो को सुझाया । छुआछूत के खिलाफ उन्होंने जोरदार आवाज उठाई और अछूतो को 'हरिजन' जैसा आदरणीय सबोधन दिया । हिन्दू-मुस्लिम एकता की रक्षा पर तोउन्होने अपनी जान तक दे दी । ब्रिटिश सरकार ने स्वतन्त्रता आन्दोलन को दबाने का भरसक प्रयास किया । कई बार उन्होने गाँधी जी तथा अन्य भारतीय नेताओं को पकड कर जेल में डाल दिया । लेकिन उन्होंने भारत को स्वतन्त्रता दिलवा दी । 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ । गांधी जी की अकस्मात हत्या कर दी गई । एक पागल नौजवान ने उन्हें प्रार्थना-सभा में गोलियो से भून दिया । वह गांधी जी के विचारों का घोर विरोधी था । उनकी हत्या 30 जनवरी, 1948 को हुई ।

*गतिविधि- गांधीजी का चित्र बनाओ।

पाठ 20 विप्लव गायन
(बालकृष्ण शर्मा "नवीन")

***शब्दार्थ**

उथल-पुथल- हलचल
हिलोर-लहर
मिजराव- वीणा के तार
कंठ -गला
मारक गीत- विनाश का गीत
राज- रहस्य
फणि- शेषनाग
क्षुब्ध- क्रोधित
दग्ध- जलना
ज्वलंत- चमकदार
अंतर्तर-हृदय
व्यापत- फैला हुआ
कालकूट- जहर

*** अतिलघु उत्तरीय प्रश्न**

1)यह कविता किस वाद से प्रभावित है?

उत्तर- यह कविता प्रगतिवाद से प्रभावित है।

2) कवि अन्य कवियों से क्या आह्वान करता है?

उत्तर- क्रांतिकारी गीत की रचना के लिए आह्वान करता है।

3)क्रांति लाने के लिए कवि किसका सहारा लेता है?

उत्तर- क्रांति लाने के लिए कवि गीत का सहारा लेता है।

4) कवि के कंठ से निकले गीत का क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर- कवि के कंठ से निकले गीत जीर्ण-शीर्ण विचारधाराओं और रुढ़िवादी विचारों का नाश हो जाएगा।

*** लघु उत्तरीय प्रश्न**

1)कवि कैसी तान सुनाना चाहते हैं?

उत्तर- कवि ऐसी तान सुनाना चाहते हैं जिससे चारों तरफ़ हलचल मच जाए।

2) कवि विप्लव गान क्यों गाना चाहता है?

उत्तर- कवि का मानना है कि विप्लव गान द्वारा ही वह लोगों को समाज के नवनिर्माण के लिए जाग्रत कर सकता है, क्योंकि सुंदर राष्ट्र की नींव पुराने, गले-सड़े रीति-रिवाजों व रूढ़िवादी विचारों पर नहीं रखा जा सकता।

3) कविता में कालकूट फणि की चिंतामणि शब्दों का अर्थ क्या है?

उत्तर- विष से परिपूर्ण शेषनाग को अपनी सबसे प्रिय मणि की चिंता हरदम रहती है, वैसे ही कवि चाहता है कि प्रत्येक मनुष्य के मन में नवनिर्माण की चिंता जाग्रत कर सके।

*** दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

1) कवि के अनुसार जीवन का रहस्य क्या है?

उत्तर- कवि के अनुसार, कवि विप्लव के माध्यम से परिवर्तन की हिलोर लाना चाहता है। इस कविता का भाव है जीवन का रहस्य है। विकास और गतिशीलता में रुकावट पैदा करने वाली प्रवृत्ति से संघर्ष करके नया निर्माण करना। नव-निर्माण के लिए कवि विध्वंस और महानाश को आवश्यक मानता है। यह विनाश सदियों से चली आ रही रुढ़िवादी मानसिकता, जड़ता तथा अंधविश्वास को काटकर दूर फेंक देगा। सारी रुकावट समाप्त कर नए सृजन तथा नए राष्ट्र को निर्माण का रास्ता साफ़ हो जाएगा। इसके लिए कवि द्वारा एक क्रांति की चिंगारी जलाने की जरूरत है।

व्याकरण

उपसर्ग की परिभाषा

उपसर्ग उस शब्दांश या अव्यय को कहते है, जो किसी शब्द के पहले आकर उसका विशेष अर्थ प्रकट करता है।

दूसरे शब्दों में– ''उपसर्ग वह शब्दांश या अव्यय है, जो किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में मूल शब्द के अर्थ में विशेषता ला दे या उसका अर्थ ही बदल दे।'' वे उपसर्ग कहलाते है।

अन	–	अनमोल, अलग, अनजान, अनकहा, अनदेखा इत्यादि।
अध्	–	अधजला, अधखिला, अधपका, अधकचरा, अधकच्चा, अधमरा इत्यादि।
उन	–	उनतीस, उनचास, उनसठ, इत्यादि।
भर	–	भरपेट, भरपूर, भरदिन इत्यादि।
दु	–	दुबला, दुर्जन, दुर्बल, दुकाल इत्यादि।
नि	–	निगोड़ा, निडर, निकम्मा इत्यादि।

लेखन–बोध

*** डायरी–लेखन**

परिक्षा मे कम अंक लाने पर अपने गुण-दोष की समीक्षा।

महेशवाड़ा

28 मार्च, 2018

आज वार्षिक परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ। इस बार फिर मैं द्वितीय स्थान पर ही आई। मुझे ऐसा लगता था कि इस बार मैं प्रथम स्थान प्राप्त करूँगी। अब मेरी समझ में आ रहा है कि हर बार मुझे दूसरा स्थान ही क्यों मिलता रहा है। मुझे स्मरण है कि मैंने चार–पाँच प्रश्नों के उत्तर कई बार काटकर लिखे हैं। ऑभर राइटिंग भी हुई है। मेरी लिखावट भी साफ–सुथरी नहीं होती है। एक बात और है, मुझमे आत्मविश्वास की जबर्दस्त कमी है। मैं कक्षा में भी चुपचाप बैठी रहती हूँ। यदि यही स्थिति रही तो निस्सन्देह, मैं हर जगह मात खा खा जाऊँगी। मुझे आत्मविश्वास जगाना ही होगा।

ऋचा

*** गतिविधि– विप्लव–गायन का चित्र बनाओ।**

बाल–महाभारत
पाठ– 38–40

प्रश्न / उत्तर

प्रश्न-1 धृतराष्ट्र ने भीम के प्रतिमा के साथ क्या किया?

उत्तर - धृतराष्ट्र ने प्रतिमा को भीम समझकर ज़ोरों से छाती से लगाकर कस लिया और प्रतिमा चूर-चूर हो गई।

प्रश्न-2 युधिष्ठिर स्वंय को दोषी क्यों मान रहे थे और उन्होंने क्या निश्चय किया?

उत्तर – युधिष्ठिर के मन में यह बात समा गई थी कि हमने अपने बंधु-बांधवों को मारकर राज्य पाया है, इससे उनको भारी व्यथा रहने लगी। अंत में उन्होंने वन में जाने का निश्चय किया, ताकि इस पाप का प्रायश्चित हो सके।

प्रश्न-3 धृतराष्ट्र ने भीम की प्रतिमा को ज़ोर से क्यों कस लिया?

उत्तर – वृद्ध राजा ने प्रतिमा को भीम समझकर ज्योंही छाती से लगाया, त्योंही उन्हें याद हो आया कि मेरे कितने ही प्यारे बेटों को इस भीम ने मार डाला है। इस विचार के मन में आते ही धृतराष्ट्र क्षुब्ध हो उठे और उसे ज़ोरों से छाती से लगाकर कस लिया। प्रतिमा चूर-चूर हो गई।

प्रश्न / उत्तर

प्रश्न-1 धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर से अपनी इच्छा के बारे में क्या बताया?

उत्तर – धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर से कहा कि वंश की परंपरागत प्रथा के अनुसार वे वल्कल धारण करके वन में जाना चाहते हैं।

प्रश्न-2 युधिष्ठिर से वन में जाने की अनुमति पाकर कौन-कौन वन के लिए रवाना हुए?

उत्तर - युधिष्ठिर से वन में जाने की अनुमति पाकर वृद्ध राजा धृतराष्ट्र, गांधारी और माता कुंती वन के लिए रवाना हुए।

प्रश्न-3 माता कुंती को वन जाते देख युधिष्ठिर क्या बोले?

उत्तर – युधिष्ठिर बोलेमाँ, तुम वन में क्यों जा रही हो? तुम्हारा जाना तो ठीक नहीं है। तुम्ही ने आशीर्वाद देकर युद्ध के लिए भेजा था। अब तुम्हीं हमें छोड़कर वन को जाने लगीं। यह ठीक नहीं है।"

प्रश्न / उत्तर

प्रश्न-1 बलराम ने समाधि में बैठकर शरीर क्यों त्याग दिया?

उत्तर – वंशनाश देखकर बलराम को असीम शोक हुआ और उन्होंने वहीं समाधि में बैठकर शरीर त्याग दिया।

प्रश्न-2 किस कारण विशाल यदुवंश समाप्त हो गया?

उत्तर – श्रीकृष्ण के सुशासन में यदुवंश ने सुख-समृद्धि को भोगा, परंतु आपसी फूट के कारण अंतत: यह विशाल यदुवंश समाप्त हो गया।

प्रश्न-3 महाभारत के युद्ध की समाप्ति के बाद श्रीकृष्ण कितने बरस तक द्वारका में राज्य करते रहे?

उत्तर - महाभारत के युद्ध की समाप्ति के बाद श्रीकृष्ण छत्तीस बरस तक द्वारका में राज्य करते रहे।

प्रश्न-4 सब बंधु-बांधवों का सर्वनाश हुआ देखकर श्रीकृष्ण ने क्या किया?

उत्तर – सब बंधु-बांधवों का सर्वनाश हुआ देखकर श्रीकृष्ण भी ध्यानमग्न हो गए और समुद्र के किनारे स्थित वन में अकेले विचरण करते रहे।

प्रश्न-5 पांचों पांडवों ने द्रौपदी को साथ लेकर तीर्थयात्रा करने का निश्चय क्यों किया?

उत्तर – श्रीकृष्ण के देहावसान का जानकार पांडवों के मन में सांसारिक जीवन के प्रति विराग छा गया। जीवित रहने की चाह अब उनमें न रही। अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को राजगद्दी पर बैठाकर पाँचों पांडवों ने द्रौपदी को साथ लेकर तीर्थयात्रा करने का निश्चय किया।